



Ref. No.....

Date 05/12/20

जलमंडल तथा वायुमंडल भी विद्यमान होता है। इसके अतिरिक्त राज्य के क्षेत्र में प्रादेशिक समुद्र, समुद्र तल से 12 मील तक सांख्यिक क्षेत्र भी सम्मिलित होता है।

(3) सरकार — सरकार राज्य की आत्मा है क्योंकि इसी के माध्यम से राज्य की इच्छाओं को मूर्तता प्राप्त होती है। गार्नेट के अनुसार "सरकार राज्य का वह साधन है जिसके द्वारा राज्य के उद्देश्य अर्थात् सामान्य नीतियों और सामान्य हितों की पूर्ति होती है। सरकार के अभाव में जनसंख्या एक असम्बद्ध, अंगरहित, अराजकवादी जनसमूह के रूप में होगी जिसके पास सामूहिक कार्य करने के लिए कोई साधन नहीं होगा।" विचारक गिडिंग्स ने कहा है कि "सरकार राज्य का अभिव्यक्त रूप है, पहचानित के सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति करती है।"

सरकार के अनेक रूप या प्रकार हैं; किसी राज्य द्वारा कौन-सी शासन प्रणाली अपनायी जाती है, यह उसकी आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए प्रकार की शासन प्रणाली सभी राज्यों में सफल नहीं होगी। राज्य की सरकार ऐसी होनी चाहिए कि वह शान्ति व सुरक्षा की स्थिति को बनाए रखने के लिए विधियों का अनुपालन सुनिश्चित कर सके। सरकार का रूप राजतंत्रिक, कुलीनतंत्रिक, लोकतंत्रिक या अधिनायकवादी हो सकता है। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जैसा बलशाली ने कहा है कि - "यदि शासन नहीं होगा तो अराजकता होगी और राज्य का अन्त हो जाएगा।" सरकार का स्वरूप कुछ भी हो परन्तु यह निश्चित है कि सरकार के बिना राज्य का अस्तित्व संभव नहीं है।

(4) संप्रभुता — संप्रभुता या प्रभुसत्ता राज्य का प्राणत्व है। एक निश्चित भूक्षेत्र में रहने वाले लोगों को जिनकी अपनी सरकार हो, राज्य तब तक नहीं कहा जा सकता जब तक कि उन्हें आन्तरिक सर्वोच्चता न प्राप्त हो। और वे किसी प्रकार के बाह्य नियंत्रण से मुक्त न हों। विलोवी के अनुसार - "संप्रभुता राज्य की सर्वोच्च इच्छा होती है।"



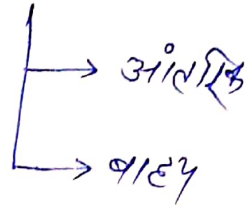
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.....

Date: 05/12/20

गान्धि के अनुसार - "संभ्रमुता राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र में विकृत होती है, तथा राज्य के अन्तर्गत विद्यमान सभी व्यक्ति और समुदाय इसके अधीन होते हैं।" यह राज्य की सर्वोच्च शक्ति है, जो उसे अन्य मानव समुदायों से पृथक करती है। 'संभ्रमुता' 1869 का सर्वप्रथम प्रयोग 16वीं शताब्दी में फ्रांसीसी विचारक जिन बोदो द्वारा किया गया बोदो के अनुसार "संभ्रमुता नागरिकों तथा प्रजाजनों के अपर विधि द्वारा अभ्यर्णित सर्वोच्च शक्ति है।" जिसका शाब्दिक अर्थ 'सर्वोच्चता' होता है।

संभ्रमुता के दो पक्ष होते हैं-



(1) आंतरिक संभ्रमुता - इसका आशय है - राज्य के भीतर जिनका करने वाले व्यक्ति तथा विद्यमान संस्थाएँ, राज्य की विधियों और आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य हैं।

(2) बाह्य संभ्रमुता - बाह्य संभ्रमुता का आशय यह है कि - राज्य किसी भी प्रकार के बाह्य नियंत्रण से मुक्त हो। बाह्य संभ्रमुता में यह धारणा है कि राज्य अपने वैदेशिक सम्बन्धों के निर्धारण में पूर्णरूप से स्वतंत्र है।

(समाप्त)